श्री कालिकादेव्यै नमः ।

योगिनीजातकम्

विमला-नामकभाषाटीकया सहितम्

अथ मङ्गलाचरणम् ।

नत्वा गणेशं गिरमब्जयोनिं विष्णुं शिवं सूर्यमुखान् ग्रहेन्द्रान् ।
वक्ष्ये स्फुटं सूर्यकृताद्यशास्त्राद् दशाक्रमं वा किल योगिनीजम् ॥ १ ॥

टीकाकारकृतमङ्गलाचरणम् ।

सिताम्भोजासीनां स्मितविजितचन्द्रांशुममृतम्
किरन्तीं नेत्राभ्यां सितमलयजालेपसुभगाम् ॥
मृणालीलावण्यप्रशमकरनीहाररुचिरां
नमामो वाग्देवीं शमितभवदावाग्निदवथुम् ॥ १ ॥
गुरूणां पादसंस्पर्शादाप्त बोधलवेन हि ।
योगिनी जातकाख्यस्य भाषां कुर्व्वे मनोरमाम् ॥ २ ॥

ग्रन्थकार गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्यादि नव ग्रहोंको प्रणाम करके श्रीसूर्य-प्रभृति-कृत प्राचीन शास्त्रोंके अनुसार योगिनीकी दशा क्रमको स्पष्ट करके प्रकाश करते हैं ॥ १ ॥

अथ योगिनीदशाविचारस्तद्गणनाप्रकारश्च—

आदौ नरस्य सदसज्जननं विविच्य संवत्सरर्त्वयनमासदिनर्क्षकालः ।
यस्मिन्दिने भवति जन्म नरस्य सम्यक् तद्भं गुणैः सह दशा खलु योगिनीजम् ॥
स्वर्क्षं पिनाकनयनैः संयोज्य वसुभिर्हरेत् ।
शेषेण योगिनी ज्ञेया शून्यपातेन सङ्कटा ॥ ३ ॥

सर्वप्रथम मनुष्यका जन्मकालिक संवत् , ऋतु, अयन, मास, दिन, नक्षत्र और इष्टकाल इत्यादिका शुभाशुभ विचार करके जिस दिन मनुष्यका जन्म हो उस जन्म-नक्षत्रकी संख्यामें २ तीन जोड़ देनेसे योगिनीकी दशा होती है ॥ २ ॥

जातकके जन्म-नक्षत्रमें तीन जोड़कर आठसे भाग देवे शेषके अनुसार क्रमसे योगिनीकी दशा होती है। यहाँ शेष शून्य होनेसे सङ्कटा-नामकी योगिनीकी दशा होती है ॥ ३ ॥

अपिच—

स्वकीयञ्च भं रूद्रनेत्रैर्युतं तद्विधायाष्टभिर्भागमाहार्य्यशेषात् ।
क्रमान्मङ्गलादिर्दशा शून्यशेषं सदा सङ्कटा प्राणसन्देहकर्त्री ॥ ४ ॥
मङ्गलादिसुसंख्याभिः समानाः पाक वत्सराः ।
विदुषा ते तथा ज्ञेयाः सङ्कटायाश्च वत्सराः ॥ ५ ॥

और भी प्रकारान्तरसे दशा क्रमको लिखते हैं। जातकके जन्म-नक्षत्रमें तीन जोड़कर आठसे भाग देनेपर शेषके अनुसार क्रमसे मङ्गलादिक योगिनियोंकी दशा होती है ॥ ४ ॥

मङ्गलादि सङ्कटा पर्यन्त योगिनियोंकी दशा-वर्ष क्रमसे एक संख्या वृद्धि करके होती है ॥ ५ ॥

योगिनीकी दशा जाननेका उदाहरण—

जैसे किसीका जन्म-नक्षत्र पुष्य है, तो अश्विनीसे गणना करनेपर संख्या आठ ८ हुई इसमें तीन ३ और जोड़ दिया तो योगफल ८+३=११ ग्यारह हुआ इसमें आठ ८ का भाग दिया तो लब्धि एक १ हुई और शेष तीन ३ बचे। यहाँ लब्धिका प्रयोजन नहीं है केवल शेषका ही ग्रहण करना चाहिये इसलिये क्रमानुसार मङ्गलासे गणना करने पर धन्या-नामक योगिनीकी महादशा हुई। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये ॥ ४-५ ॥

अथ योगिनीनामानि तासां प्रशंसा च—

मङ्गला-पिङ्गला-धान्या-भ्रामरी-भद्रिका तथा ।
योगिन्योऽष्टौ समाख्याता उल्का-सिद्धा च संकटा ॥ ६ ॥
लोकत्रयेष्वपि परा प्रलयः प्रकर्त्री यो सेवते तदपरा धनसौख्यदात्री ।
एतत्समस्तसुखदा सुसमृद्धि कर्त्री या वैष्णवी हि जगतां परिपालिका च ॥

मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा, ये आठों योगिनियोंके नाम भगवान् शङ्करजीने श्रीपार्वतीजीके समक्ष कहा था यह विचार करना चाहिये ॥ ६ ॥

तीनों लोकमें जो इनकी सेवा करते हैं उनके लिये धन और सौख्यको देती हैं । जो सेवा विमुख हैं उनके लिये प्रलय करनेवाली हैं । इस प्रकार यह वैष्णवी जगन्माता योगिनी संसारमें सब सुखको देती है और परिपालन (रक्षा) करती है ॥ ७ ॥

योगिनीदशा कदा विशेषेण फलदा इत्याह—

खेटा नराऽपि पुरुषस्य न रक्षकाः स्युः तस्माद्दशार्चनविधिः पुरुषेण कार्यः ।
युद्धे भयेऽपि विदुषा परिचिन्तनीया रोगादिकेऽपि धनसौख्यसमृद्धिता च ॥
दशानामथान्तर्दशानां सदैव प्रपूजां विशेषाद्विरुद्धार्चनञ्च ।
प्रकुर्वन्नरः सर्वसिद्धिं प्रयाति रिपूणां जयं कीर्त्तिमारोग्यमायुः ॥ ६ ॥

जब मनुष्यको प्रतिकूल (विरुद्ध) योगिनीकी दशा प्राप्त होती है तब कोई ग्रह या कोई पुरुष रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता है । इसलिये विरुद्ध दशाकी शान्ति अवश्य करनी चाहिये, ऐसा करनेसे मनुष्य सङ्ग्रामभय, राजभय और रोगभय से मुक्त होकर धन और सौख्यको प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

प्रतिकूल (विरुद्ध) दशा तथा अन्तर्दशाके लिये सर्वदा शान्ति करता हुआ मनुष्य सर्व-सिद्धिको प्राप्त करता है, और शत्रुओंको जीतकर कीर्त्ति (यश) तथा आरोग्यताको प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

अथ योगिनीस्वामिनः दशावर्ष संख्याच—

अथास्मामधीशाः क्रमान्मङ्गलातः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः ।
बुधः सूर्यसूनुर्भृगु सिंहिकायाः सुतः सङ्कटायास्तथान्ते च केतुः ॥ १० ॥
एक-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्च-षट्च-सप्ताष्टकं-क्रमात् ।
मङ्गलाद्याः दशा बोध्या यथा नाम तथा फलम् ॥ ११ ॥

अब मङ्गलादि योगिनियों के स्वामी कहते हैं जैसे मङ्गलाका स्वामी चन्द्रमा, पिङ्गलाका सूर्य, धान्याका गुरु, भ्रामरी का मङ्गल, भद्रिकाका बुध, पिङ्गलाका शनि, सिद्धाका शुक्र और संकटाका स्वामी राहु या केतु ऐसा समझना चाहिये ॥ १० ॥

मङ्गलादि योगिनीके दशा-वर्ष कहते हैं जैसे मङ्गलाका एक वर्ष, पिङ्गलाका दो वर्ष, धान्याका तीन वर्ष, भ्रामरीका चार वर्ष, भद्रिकाका पांच वर्ष, उल्काका छः वर्ष, सिद्धाका सात वर्ष और सङ्कटाका आठ वर्ष दशाका मान होता है । नामके अनुसार इनके फलभी समझने चाहिये ॥ ११ ॥

अथ योगिनीदशायाः भुक्तभोग्यानयनप्रकारः—

अथो भस्य भुक्ता घटी स्वैर्दशाब्दैर्निहन्यात्तथा सर्वताराविभक्ता।
भवेद्वर्षपूर्वादिभुक्ता दशा सा स्ववर्षे च पात्या भवेद्भोग्यसंज्ञा॥ १२॥

अपिच—

गतर्क्षनाडीगुणिता दशाब्दैः सर्वर्क्षनाडीविहृता फलं यत्।
वर्षादिकं भुक्तफलं ततश्च भोग्यं दशाऽब्दात् प्रविशोध्य लेख्यम्॥ १३॥

अब योगिनीदशाका भुक्त-भोग्य बनाने का प्रकार कहते हैं। जैसे—जिस योगिनीकी दशावर्षमें भुक्त-भोग्य बनाना हो उस योगिनीकी दशावर्ष, संख्यासे भयातकी घटी-पलको गुणा करके भभोगकी घटी-पलसे भाग दे तो क्रमसे वर्ष, मास, दिनादि लब्धि होती है। उसको भुक्त समझना चाहिये, भुक्त दशा वर्षादिको पूर्णदशा-वर्षमें घटाने से शेष भोग्य होता है॥ १२॥

और भी प्रकारान्तरसे लिखते हैं कि दशावर्ष-संख्यासे भयातको गुणा करके भभोगसे भाग देनेपर दशावर्षादि लब्धि होती है, भुक्तको पूर्ण-दशावर्षमें घटाने से भोग्यका मान होता है॥ १३॥

उदाहरण—जैसे किसी मनुष्यके जन्मकालमें भयात घटी १५ पला ३० भभोग घटी ६० पला ५० है तथा भद्रिका-नामक योगिनीकी महादशामें जन्म है। यहां पहले भयात और भभोगको पलात्मक (एक-जातीय) बनाया तो क्रमसे भयात = ९३०। भभोग = ३६५० पलात्मक हुये पलात्मक भयातको भद्रिकाकी महादशा वर्षसंख्या ५ पांचसे गुणा किया तो ४६५० हुआ अब इसमें पलात्मक भभोग से भाग देनेपर लब्धि १, और शेष १००० हुये। पुनः शेषको १२ से गुणा करके भभोगसे भाग देनेपर लब्धि ३ और शेष १०५० हुये। पुनः शेषको ३० से गुणा करके भभोगसे भाग देनेपर लब्धि ८ और शेष २३०० हुये पुनः शेषको ६० से गुणा करके भभोगसे भाग देनेपर लब्धि ३७, और शेष २९५० हुये। पुनः शेषको ६० से गुणा करके पूर्वोक्त भभोगसे भाग देनेपर लब्धि ४८ शेष १८०० हुये। अब यहाँ लब्धि क्रमसे १ वर्ष ३ महीना ८ दिन ३७ घड़ी ४८ पला हो जानेके कारण शेषको त्याग दिया क्योंकि प्रयोजन शून्य है। इसी तरह सभी योगिनीको महादशावर्षमें भुक्तका ज्ञान करना चाहिये। अब भद्रिकाकी महादशा-वर्ष ५ पांचमें इस लाये हुये भुक्त दशावर्षादिको

घटाया तो क्रमसे २ वर्ष ८ महीना २१ दिन २२ घड़ी और १२ पला भद्रिका योगिनीकी भोग्य-महादशा-वर्षादि हुई । इसी तरह और भी समझना चाहिये ॥

अथ दशायां विशेषः—

विरुद्धायां दशायां च विरुद्धान्तर्दशा यदि ।
विरुद्धश्च तदन्तश्चेद्ध्रुवं नाशयते नरम् ॥ १४ ॥
मङ्गलायां दशायां तु मङ्गलान्तर्दशा यदि ।
मङ्गलायास्तदन्तश्चेत्प्राप्नोत्येव मनोरथान् ॥ १५ ॥

अब दशाके लिये विशेष कहते हैं—यदि प्रतिकूल योगिनीकी महादशामें प्रतिकूल ही अन्तर्दशा प्राप्त हो और प्रतिकूल प्रत्यन्तर्दशा होवे तो निश्चय उस मनुष्यका नाश होता है ॥ १४ ॥

मङ्गलाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्दशा और मङ्गलाकी ही प्रत्यन्तर्दशा हो तो निश्चय करके मनोरथ की सिद्धि होती है ॥ १५ ॥

अथ मङ्गलादियोगिनीनां महादशाफलान्याह—

वैरिणां च विपदां विनाश कृद्वाहनानि वसुरत्नलाभदा ।
कामिनी-सुत-गृहादिलाभदा मङ्गला सकलमङ्गलोदया ॥ १६ ॥
दुःख-शोककुल-रोग वर्द्धिता व्यग्रता च कलहः स्वजनैश्च ।
अन्त्यभागफलदा कथिताऽसौ पिङ्गला च विदुषा सुखदाऽऽदौ ॥ १७ ॥

मङ्गलाकी महादशाका फल कहते हैं—जब मङ्गलाकी महादशा प्राप्त हो तब शत्रुकृत विपत्तियोंका नाश, वाहन (हाथी-घोड़े), धन, रत्न (जवाहरात) स्त्री-पुत्र और गृह इत्यादिका लाभ होता है, क्योंकि मङ्गलाकी दशा सभी मङ्गल कार्यको सिद्धि के लिये ही होती है ॥ १६ ॥

पिङ्गलाकी महादशाका फल कहते हैं—दुःख-शोक-कुल-रोगकी वृद्धि बन्धु-बान्धवोंसे कलह (लड़ाई) होती है, यह फल अन्त्यभागमें देती है और आदि भागमें सुख मिलता है ऐसा विद्वानोंने कहा है ॥ १७ ॥

धान्याभ्रामर्योर्महादशाफलानि—

धनं धान्यवृद्धिं धराधीशमान्यं सदा युद्धभूमौ जयं धैर्य्यवन्तम् ।
कलत्राङ्गनानां सुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धन्यका धातुवृद्धिं करोति ॥ १८ ॥
विदेशे भ्रमं हानिमुद्वेगताञ्च कलत्राङ्गपीडां सुखैर्वर्जितत्वम् ।
ऋणं व्याधि वृद्धिं तथा भूपकोपंदशा भ्रामरी भाग्य भङ्गं करोति ॥१९॥

धन-धान्यकी वृद्धि, राजाओंसे आदर, युद्धमें विजय, धैर्य्यकी वृद्धि, स्त्री-पुत्रादिसे विविध प्रकारके सुख और अनेक तरहके वस्त्र तथा धातुकी वृद्धि धान्याकी महादशामें होती है यह जानना चाहिये ॥ १८ ॥

परदेशकी यात्रा, धनकी हानि, चित्तमें उद्वेग, स्त्री-पुत्रादिकोंसे पीड़ा, सुखका नाश, कर्ज (ऋण) और रोगोंकी वृद्धि, राजाओंसे दण्ड, भाग्य-फलका नाश ये सब भ्रामरीकी महादशामें जानना ॥ १९ ॥

भद्रिकोल्कयोर्महादशाफलानि—

धनानां विवृद्धिं गुणानां प्रकाशं समीचीनवस्त्रागमं राजमान्यम् ।
अलङ्कार-दिव्याङ्गना-भोग-सौख्यं सदा भद्रिका भद्रकार्य्यं करोति ।।२०।।
भ्रमं व्याधिकष्टं ज्वराणां प्रकोपं धनादेश्च दारादिकानां वियोगम् ।
स्वगात्रैर्विवादं सुहृद्बन्धुवैरं दशाचोल्किकाऽनर्थकर्त्री सदैव ।। २१ ।।

धनकी वृद्धि, गुणका विकाश, अनुकूल वस्त्रादिका लाभ, राजाओंसे मान, अनेक प्रकारके भुषण-सुन्दरी स्त्री-सुखादिका लाभ और अनेक तरहके मङ्गल (शुभ) कार्य ही भद्रिकाकी सम्पूर्ण दशामें होते हैं ॥ २० ॥

चित्तमें भ्रान्ति, व्याधिमे पीड़ा, ज्वर-प्रकोपसे कष्ट, तथा धन-स्त्री-पुत्रादिसे वियोग, बन्धुवर्गों से लड़ाई, दोस्तोंसे दुश्मनी इसी तरहके अनेक अशुभफल उल्काकी महादशामें होते हैं यह जानना चाहिये ॥ २१ ॥

अथोल्कायां विशेषः—

उल्का यदा विरुद्धा स्यात्तदा ज्वालामुखी भवेत् ।
पूजनीया प्रयत्नेन दुःखशान्त्यै न संशयः ।। २२ ।।

अब उल्काकी महादशामें विशेष कहते हैं—यदि उल्काकी विरुद्धा दशा प्राप्त हो तो उल्का ज्वालामुखी होती है । इसलिये दुःख-शान्तिके लिये यत्नपूर्वक इसकी शान्ति और पूजा करनी चाहिये ॥ २२ ॥

सिद्धासङ्कटयोर्महादशाफलानि—

राज्ञोऽभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादि लाभं गुणकीर्त्ति सिद्धिम् ।
रामादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यं विद्यां च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ।। २३ ।।
जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां च नाशम् ।
गृहे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं दशा सङ्कटा राजपक्षाद् भयञ्च ।। २४ ।।

राजाओंसे आदर, अपने बन्धु-वर्गोंसे प्रेम, धन-धान्यका लाभ, गुणका विकाश, बगीचे-फुलवाड़ी आदिसे सौख्य, सन्तानकी वृद्धि यह अनेक प्रकारसे मनुष्यका अभीष्ट सिद्ध करनेवाली सिद्धाकी महादशा होती है ॥ २३ ॥

बन्धु वर्गोंसे द्वेष, ज्वर प्रकोपसे तथा स्त्री पुत्रादिसे कष्ट, पशुका नाश, सदा विदेशमें वास, अपने गृहसे उदासीनता और राजभय इस तरह अनेक अनिष्ट-फल संकटाकी महादशा में जानना ॥ २४ ॥

कस्यापि लोकस्य न सङ्कटान्विता लोकान्तरप्राप्तिरिदं ध्रुवं स्यात् ।
पुण्यैश्च चेतस्य न जातमत्र विपत्ति-शोको भवतीह नूनम् ॥ २५ ॥
नो चेत्तदाऽत्यात्मजनस्य हानिर्मातुः पितुर्वस्त्रविभूषणादिः ।
कोपस्य पुत्रस्य तथा युवत्या ददाति शोकं खलु सङ्कटा च ॥ २६ ॥

सङ्कटा—नामकी योगिनीकी दशा मनुष्यके प्राणान्तके लिए ही होती है । ऐसे ही कोई पुण्यवान् मनुष्य इस सङ्कटा नामकी योगिनीकी दशामें कुशलसे बचते हैं । नहीं तो प्रायः सभीके लिये बन्धु वर्गोंसे, माता, पिता, वस्त्र, भूषण, धन, सम्पत्ति, खजाना और स्त्री-पुत्रादिसे वियोगादिक कष्टके लिए ही होती है ऐसा जानना चाहिये । अतएव सङ्कटाकी दशा उपस्थित होनेसे अवश्य इसकी विधिपूर्वक पूजा-पाठ शान्ति यथाशक्ति स्वयं या ब्राह्मणोंके द्वारा करवाना चाहिये ॥ २५-२६ ॥

इह मया लिखितञ्च दशाफलं त्वनुभवेन युतञ्च चमत्कृतम् ।
शिवशिवाकथितं शिवयामले न हि कदापि तिरस्कृतिमर्हति ॥ २७ ॥

यह योगिनियोंकी महादशा का फल जिस प्रकार भगवान् शङ्करने स्वयं अपने मुखारविन्दसे पार्वतीजीके सामने वर्णन किया था उसी प्रकार हमने अनुभवसे शङ्कर भगवान्की दयासे चमत्कारपूर्वक आप सज्जनोंके कल्याणार्थ प्रकाशित किया है । शङ्कर भगवान् की उक्ति होनेके कारण यह विषय किसीसे तिरस्करणीय नहीं है प्रत्युत आदरणीय है ॥ २७ ॥

इदं रहस्यं परमं सुखार्थं यदुक्तमेतद्विरजामले हि ।
मर्त्यस्थलोकस्य सुखाय सर्वं श्रीशङ्करेणैव प्रकाशितं हि ॥२८॥

यह योगिनीजातक सम्बन्धी विषय परम गोप्य है, केवल मनोविनोदके लिये भगवान् शङ्करजीने पार्वतीसे "विरजामल" ग्रन्थके प्रसङ्गमें कहा था, और भक्त-

जनोंके सुखके लिये अनुग्रह करके मर्त्य लोकमें श्रीपार्वतीजी द्वारा प्रकाशित हुआ ऐसा समझना चाहिये ॥ २८ ॥

इति भवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके महादशाफलाध्यायः ॥ १ ॥

अथ योगिनीदशामध्येऽन्तर्दशानयनप्रकारः ।

अथान्तर्दशायाः प्रकारं प्रवच्मि दशावर्षकं स्वस्ववर्षेण गुण्यम् ।
ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदा खेटविद्भिर्विधेया फलार्थम् ॥ १ ॥
अन्तर्दशाफलमहांत्वनुभाव्य सर्वजन्तोः शुभाशुभफलानि करोति सूक्ष्मम् ।
विद्वद्भिरत्र तदधीशवशात्फलं हि लेख्यं च जन्मसमये चतुरैः फलैश्च ॥२॥

अब योगिनीकी महादशामें अन्तर्दशा लानेका प्रकार इस श्लोकसे वर्णन करते हैं कि जिस योगिनीकी महादशामें जिसकी अन्तर्दशा निकालनी हो उस योगिनीकी महादशा-वर्ष-संख्याको उतनीही संख्यासे गुणा करके गुणनफलमें ३६ का भाग देना तो वर्षादिकी लब्धि होगी। वर्षावशेषको १२ से गुणा करके ३६ से पुनः भाग देनेसे मास और शेषको ३० से गुणा करके ३६ का भाग देनेसे दिनकी लब्धि जानना ऐसेही सभीके दशामें करना ॥ १ ॥

अन्तर्दशा निकालनेके बाद दशान्तर्दशाका फल योगिनीके स्वामीके अनुसार जन्मकालिक विचारसे अनुभवसे शुभाशुभ स्थूल-सूक्ष्म फल होता है ऐसा विद्वानों-को आदेश करना चाहिये ॥ २ ॥

योगिनीकी महादशामें अन्तर्दशा निकालनेका उदाहरण—

जैसे मङ्गला नामकी योगिनीकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा निकालनी है, तो मङ्गलाकी दशावर्षसंख्या १ एकको एकसे गुणा किया तो एकही रहा इसमें ३६ से भाग देनेसे लब्धि शून्य हुई पुनः शेष स्वरूप एकको १२ से गुणा करके ३६ से भाग दिया तो लब्धि शून्य हुई और शेष स्वरूप १२ को ३० से गुणा करके ३६ से भाग दिया तो लब्धि १० हुई अर्थात् लब्धि क्रमसे वर्ष ० मास ० दिन १० यह मङ्गलाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्दशा हुई ॥ १-२ ॥

अथवा—सङ्कटाकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्दशा लानेके लिये सङ्कटाकी महादशा वर्ष-संख्या ८ को ८ से गुणाकरके ३६ का भाग देनेपर लब्धि १ और शेष २८ हुआ, पुनः शेष २८ को १२ से गुणा करके ३६ से भाग दिया

तो लब्धि ९ और शेष १२ हुआ, पुनः शेष १२ को ३० से गुणा करके ३६ का भाग देनेसे लब्धि १० और शेष ० हुआ अर्थात् लब्धि क्रमसे वर्ष १, मास ९, दिन १० यह सङ्कटाकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्द्दशा हुई ॥ १-२ ॥

अथ मङ्गलापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनां फलानि—

मं० मं०-द्रव्याम्बराणां सुखमाधिपत्यो मान्यो नरेशस्य च कीर्त्ति युक्तः ।
अश्वैर्द्विदन्तैश्च कलत्रयुक्तश्चेन्मङ्गला मङ्गलपाकमध्ये ॥ ३ ॥

मं० पिं०-प्रतापानलेनैव दूरी-भवन्ति प्रतिस्पर्द्धिनो राजमान्यत्वमत्र ।
धनप्राप्तिरत्राम्बराणां सुखं स्यात् यदा मङ्गलामध्यगा पिङ्गला स्यात् ॥४॥

मं० मं०—मङ्गलाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा प्राप्त होनेसे मनुष्यको अनेक द्रव्य-वस्त्रका सुख, राजाओंसे सम्मान, बन्धु-वर्गोंमें यशका लाभ होता है और हाथी, घोड़े, स्त्रियोंसे भी युक्त होकर अनेक सुखका लाभ होता है ॥ ३ ॥

मं० पिं०—मङ्गलाकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होनेसे मनुष्यके यशकी वृद्धि होती है । प्रतापसे शत्रु आपसे ही नष्ट हो जाते हैं । राजाओंसे सम्मान प्राप्त होता है । धन और वस्त्रकी प्राप्ति तथा सुख विशेष लाभ होता है ॥ ४ ॥

मं० धा०—
व्यापारतो, बहुसुखं धनवृद्धिरत्र मित्रादिवस्त्रधनधान्यगृहादिलाभः ।
शत्रोः पराजय इह स्वजनैः प्रतिष्ठां धन्या दशा भवति मङ्गलपाकमध्ये ॥५॥

मं० भ्रा०-शरीरनेत्रामयकण्ठरोगो नानाविकाराः सहजापदश्च ।
सर्वाङ्गपीडा तरुणीवियोगश्चेद् भ्रामरी मङ्गलापाकमध्ये ॥ ६ ॥

मं० धा०—व्यापारसे अनेक सुख तथा धनकी वृद्धि, मित्रका समागम, गृह, धन, धान्य, (अन्न) का लाभ, शत्रुओं पर विजय, बन्धु बान्धवोंमें प्रतिष्ठा होती है जब मङ्गलाकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है ॥ ५ ॥

मं० भ्रा०—जब मङ्गलाकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तो शरीरमें रोगकी वृद्धि होती है, नेत्र, कण्ठमें विशेष पीड़ा होती है । औरभी अनेक प्रकारके रोग स्वभावसे ही हो जाते हैं । सर्वाङ्गमें पीड़ा, स्त्रियोंसे वियोग भी होता है ॥ ६ ॥

मं० भ०-शरीर सौख्यं ऋणमोचनं च धनागमः कीर्त्तिविशेषवृद्धिः ।
देशाधिकारो नृपमान्यता च भद्रादशा मङ्गलपाकगा चेत् ॥ ७ ॥

मं० उ०—

चित्तभ्रमं भ्रमणतः पथि चौरकष्टं शोकोदयं स्वजनवर्गविवादमुग्रम् ।
वामादिपुत्रकलहो निजदेहपीडा उल्का यदा भवतिमङ्गल पाकमध्ये ।।८।।

मं० भ०—जब मङ्गलाकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीरका सौख्य, ऋणसे छुटकारा, धन–कीर्त्ति (यश) की विशेष वृद्धि होती है, देश में अधिकार और राजाओंसे प्रतिष्ठा होती है ॥ ७ ॥

मं० उ०—जब मङ्गलाकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब चित्तमें भ्रान्ति, विदेश गमन करनेसे रास्तेमें चोरका भय, शोककी वृद्धि, बन्धु-बान्धवोंसे भयङ्कर लड़ाई और स्त्री-पुत्र से विवाद, अपने शरीरमें पीड़ा होती है ॥ ८ ॥

मं० सि०—

व्यापारसिद्धिर्धनधान्यलाभो मानार्थभोगो युवतीविलासः ।
सन्तापसौख्यं रिपुहानिरत्र चेत्सिद्धिका मङ्गलपाकमध्ये ।। ९ ।।

मं० सं०—

धनहृतिः किल चौरजनाद् भवेच्चरण-नेत्र-शिरः-परिपीडनम् ।
सुतकलत्रवियोगभयं भवेद्यदि च मङ्गलपाकगसङ्कटा ।। १० ।।

मं० सि०—जब मङ्गलाकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब व्यापार में सिद्धि, धान्य (अन्न), मान (प्रतिष्ठा), अर्थ (धन) का लाभ, युवतियोंसे भोग विलास, सन्ताप और शत्रुका नाश होता है और सौख्यकी वृद्धि होती है ॥

मं० सं०—जब मङ्गलाकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब चोरोंसे धनका हरण, पाँव, नेत्र (आंख), शिरमें पीड़ा होती है, स्त्री-पुत्रके वियोगका भय होता है ॥ १० ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके मङ्गलापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि ।

अथ पिङ्गलापाकमध्ये योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि ।

पिं० पिं०—

शरीरे सुखं व्याधिवैपत्यनाशं धनैर्वामनैः संयुतो सिद्धिता च ।
गृहे स्वल्पवासः प्रवासाभिलाषः यदा पिङ्गला पिङ्गलापाकगा स्यात् ।।१।।

पिं० ध०—

शत्रोर्विमर्दनकरी ऋणमोचकर्त्री राजप्रसादफलदाधनधान्यकर्त्री ।
पुत्रातिकर्त्री निजगेहदात्री धन्या दशायां ननु पिङ्गलायाम् ॥ २ ॥

पिं० पिं०—जब पिङ्गलाकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा हो तब शरीरमें सुख, रोग और विपत्तियोंका नाश, धन तथा वाहन (हाथी-घोड़े) की प्राप्ति, मनोरथ कार्यकी सिद्धि, अपने घरमें स्वल्पवास और विदेश यात्राकी अभिलाषा होती है ॥

पिं० ध०—जब पिङ्गलाकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब शत्रुका नाश, ऋणसे उद्धार, राजाओंसे प्रेम, धन-धान्यकी वृद्धि, गृह और पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

पिं० भ्रा०—

शोकोदयं विकलता विविधार्त्तिकर्त्री देशान्तरे फलवियोगकरी व्रणार्त्तिः ।
हानिः पशोः सुतकलत्रजनैर्वियोगं चेद् भ्रामरी भवति पिङ्गलपाकमध्ये ॥

पिं० भ०—

मित्रादिसौख्यमणिमौक्तिकलाभदा च भार्यासुतादिधनदा सुखधान्यकर्त्री ।
देशाधिकारपदवीमनु यच्छतीयं चेद् भद्रिका भवति पिङ्गलपाकमध्ये ॥

पिं० भ्रा०—जब पिङ्गलाकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तब शोकसे विकलता, अनेक प्रकारके कष्ट, विदेशगमनसे कष्ट, शरीरमें व्रण (घाव), स्त्री-पुत्र-पशु-(चतुष्पद) का नाश और बन्धु बान्धवोंसे वियोग होता है ॥ ३ ॥

पिं० भ०—जब पिङ्गलाकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा हो तब मित्र-वर्गोंसे प्रेम, मणि (जवाहरात), मोती का लाभ, स्त्री-पुत्र-धन-धान्यसे सुख, देशमें कुछ अधिकारकी पदवी प्राप्त होती है ॥ ४ ॥

पिं० उ०—सदा विग्रहो वादयुद्धे मतिश्च प्रतिस्पर्द्धनं भाषणे तत्परत्वम् ।
धनार्त्तिश्च वस्त्रादिकानां वियोगो यदा चोल्किका पिंगलापाकमध्ये ॥ ५ ॥

पिं० सि०—सौभाग्यसिद्धिं विजयो रिपूणां देवार्च्चनं ब्राह्मणपूजनं च ।
मित्रादिसौख्यं धनधर्म्मलाभं सिद्धादशा पिंगलापाकमध्ये ॥ ६ ॥

पिं० उ०—जब पिङ्गलाकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा प्राप्त हो तब सर्वदा बन्धु बान्धवोंसे विवाद (लड़ाई), युद्धकी इच्छा, विरुद्ध भाषणमें तत्परता, धनका नाश, स्त्री-पुत्र-वस्त्रादिसे वियोग होता है ॥ ५ ॥

पिं० सि०—जब पिङ्गलाकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब अपने सौभाग्यकी सिद्धि, शत्रुओंका नाश, देवता ब्राह्मणकी पूजामें श्रद्धा, मित्रवर्गोंसे प्रेम, धन और धर्मका लाभ होता है ॥ ६ ॥

पिं० सं०—चौराद्धनं नश्यति गुप्तदुःखं हानिर्भयंपुत्रकलत्रभेदम् ।
ज्वरो भवेत् सन्धिसमे च पीडा तमोधिपा पिङ्गलपाकमध्ये ॥ ७ ॥

पिं० मं०—
तुरगभवनदाराद्रव्यपुत्राप्तिसौख्यं नरपतिकुलमान्यः सर्वदाधर्म्मवृद्धिः ।
भवति न तनुरोगः पुष्टता स्याच्छरीरे सकलसुखसमृद्धिः मङ्गला पिङ्गलायाम् ॥

पिं० सं०—जब पिङ्गलाकी महादशामें संकटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब चोरोंसे धनका नाश, मानसी दुःख, धन-नाशका भय, स्त्री-पुत्रसे लड़ाई, ज्वरसे पीड़ा और सन्धियोंमें पीड़ा होती है ॥ ७ ॥

पिं० म०—जब पिङ्गलाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब हाथी, घोडे, गृह, स्त्री, पुत्र, द्रव्य की प्राप्ति, राजाओं से प्रतिष्ठा, धर्मकी वृद्धि होती है, और शरीर नीरोग होकर पुष्ट हो जाता है, सब सुखकी वृद्धि होती है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशंकरसंवादे योगिनीजातके पिङ्गलापाकमध्येऽन्तर्द्दशाफलानि ।

◆

अथ धन्यापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि ।

ध० ध०—
मेधाभिमानमहिमा महतां स्वकाये विद्यामतिर्धनकलत्रसुखानि शश्वत् ।
शत्रोर्जयं भवति चात्र महत्सुखं हि धान्या यदा भवति मध्यगता स्वपाके ॥

ध० भ्रा०—
अलसतिमिरतन्द्रावातयुक्तंशरीरं अमरकुलद्विजानां द्वेषणं विग्रहञ्च ।
यवनजनविवादं मानसे मानभङ्गं यदि भवति च धन्यामध्यगा भ्रामरी चेत् ॥

ध० ध०—जब धन्याकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब अपने शरीरमें वृद्धि, यश प्रतिष्ठाकी वृद्धि, विद्या पढ़नेकी इच्छा, स्त्री-धन-पुत्रादिसे विशेष सुख, शत्रुओंका नाश और सुखकी वृद्धि होती है ॥ १ ॥

ध० भ्रा०—जब धन्याकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तब

आलस्य, अज्ञान, निद्रा और वायु सम्बन्धी बिमारी शरीरमें हो, देवता, ब्राह्मणोंसे द्वेष और लड़ाई, यवनों (नीच जाति) से कलह, मानसी व्यथा और मानका भङ्ग होता है ॥ २ ॥

ध० भ०—

अतुलविमलमूर्त्तिः द्रव्यवृद्धिर्नरेभ्यः स्वजनसुतकलत्रैः सर्वदा सौख्यमत्र ।
कठिनरिपुविनाशो गुमसौख्यादिवृद्धिर्यदि भवति च धन्यामध्यगा भद्रिकाचेत् ॥

ध० उ०—

व्ययकलहविपत्तिः वादवैकल्यता च रिपुविविधविकारैर्विग्रहो बन्धुभिश्च ।
नृपनिशिचरपीड़ा वायुपीड़ा च संधौ यदि भवति च धन्यामध्यगा चोल्किकाचेत्

ध० भ०—जब धन्याकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीर तथा कान्तिकी वृद्धि, द्रव्यका लाभ, स्त्री-पुत्र और बन्धु बान्धवोंसे सौख्य, बड़े २ शत्रुओंसे विजय और मनोरथकी सिद्धि होती है ॥ ३ ॥

ध० उ०—जब धन्याकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब व्यर्थ कार्यमें धनका व्यय, स्वजनोंसे कलह, अनेक तरहकी विपत्ति, शत्रुओंसे प्रबल कलह, बन्धु बान्धवोंसे विग्रह, राजा और निशाचरों (भूत-प्रेत) से पीड़ा तथा सन्धि अङ्गोंमें वायुकी पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

ध० सि०—नृपतिमानविराजितविग्रहं हतरिपुं तुरगार्थयुतं सदा ।
सुतकलत्रसुखं ननु सिद्धिका प्रकुरुते यदि धन्यदशाङ्गता ॥५॥

ध० सं०—कलत्रकष्टं कमलावियोगं शत्रुप्रकोपं नृपचौरभीतिम् ।
वातादिरोगं अतविह्वलत्वं तमोधिपाधन्यदशां गताचेत् ॥ ६ ॥

ध० सि०—जब धन्याकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब राजाओंसे शारीरिक प्रतिष्ठा, शत्रुओंका नाश, वाहन (हाथी घोड़े) धनकी वृद्धि, स्त्री-पुत्रसे पारिवारिक सुखका लाभ होता है ॥ ५ ॥

ध० सं०—जब धन्याकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब स्त्री-पुत्रसे कष्ट, धनका क्षय, शत्रुओंका आक्रमण, राजभय तथा चौर भय होता है । और वात पित्तकी विमारीसे कार्य-साधनमें असमर्थता होती है ॥ ६ ॥

ध० मं०—

भूपाज्जयं क्षितिविकारविचित्रभोगं प्रौढप्रतापनिहितारिगणं सुपुण्यम् ।
द्रव्यस्वलाभयुतमत्र च तीर्थलाभमब्जाधिपा यदि च धन्यदशां प्रपन्नाः ॥

ध० पिं०—

सदा शत्रुनाशः स्वगोत्रे प्रतिष्ठा महद्द्रव्यलाभो विवादे जयश्च ।
स्वदारादिसौख्यं फलैः स्वार्थसिद्धिः भवेद्धन्यगा पिङ्गला चेत्तदानीम् ॥८॥

ध० मं०—जब धन्याकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब राजाओंमें प्रतिष्ठा, अनेक प्रकारके ऐहिक सुखोंका लाभ, शत्रुओंका नाश, पुण्यकार्यमें श्रद्धा, धनका लाभ और तीर्थ यात्राकाभी लाभ होता है ॥ ७ ॥

ध० पिं०—जब धन्याकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शत्रुओंका नाश, बन्धु-वर्गोंमें प्रतिष्ठा, विशेष द्रव्यका लाभ, संग्राममें विजय, स्त्री-पुत्रादिसे सौख्य और मनोरथ कार्यकी सिद्धि होती है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके धन्यापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि ।

* * *

अथ भ्रामरीपाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि ।

भ्रा० भ्रा०—विकलबुद्धिधनार्त्तिकरी महत्समरदुःसहदुर्गनिवेशनम् ।
तुरगवाहनहानिकृतापदो भ्रमरिपाकगता भ्रमरी यदा ॥ १ ॥

भ्रा० भ०—

भूपालतो बहुसुखं सुमहाप्रतिष्ठा भाग्योदयं स्वजन-पुत्रकलत्र-लाभम् ।
भूम्यादि, लाभमतुलं कुरुते च भद्रा भ्रामर्दशाङ्गतवती नृपतीन्द्रमान्यम् ॥२॥

भ्रा० भ्रा०—जब भ्रामरीकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तब बुद्धि और धनका नाश होता है, संग्राममें पराजय, शत्रुकृत अनेक उपद्रवोंकी वृद्धि, वाहन (हाथी घोड़ा) आदिका नाश और अनेक प्रकारकी विपत्ति आ जाती है ॥

भ्रा० भ०—जब भ्रामरीकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है । तब राजाओंसे अनेक प्रकारके सुख और विशेष प्रतिष्ठाका लाभ होता है । भाग्यका उदय, अपने बन्धु-बान्धवोंसे प्रेम, स्त्री-पुत्रादिसे सुख, पृथिवीका लाभ और अतुल सुखका लाभ होता है ॥ २ ॥

भ्रा० उ०—

वातामयं श्लेष्मशिरोव्यथां च कष्टातिकष्टकुमतिं लभते भयञ्च ।
रिपूदयं कीर्त्तिविनाश कर्त्री भ्रामर्दशामधिगता किल चोल्किकास्यात् ॥३॥

भ्रा० सि०-उग्रं विवादं सुमतेः प्रकाशं माङ्गल्यवस्त्राभरणादिलाभम् ।
प्रज्ञा विशेषं नृपमान्यता च भ्रामर्दशामध्यगता च सिद्धा ॥४॥

भ्रा० उ०—जब भ्रामरीकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब वायु तथा श्लेष्माकी बिमारी, शिरमें व्यथा, औरभी अनेक प्रकारके बड़े २ कष्टकी प्राप्ति, बुद्धिका नाश, शत्रुओंकी वृद्धि तथा शत्रुओंका भय और कीर्त्ति (यश) का विनाश होता है ॥ ३ ॥

भ्रा० सि०—कठिन २ विवाद तथा सुन्दर मतिका प्रकाश, अच्छे २ वस्त्राभरणका लाभ, बुद्धिकी वृद्धि और राजाओंसे प्रतिष्ठा होती है । जब भ्रामरीकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब ऐसा समझना चाहिये ॥ ४ ॥

भ्रा० सं०-तनौ दुःखकंराजपक्षादि भीतिः सुहृद्बन्धुकष्टं गृहे नैव वासः ।
मतेर्विभ्रमो घातपादादिकञ्च सदाभ्रामरीपाकगा सङ्कटा स्यात् ॥

भ्रा० मं०—रजतविद्रुमहेमवराङ्गनासुखमहीपतिमानयुतं नरम् ।
विमलकीर्त्तियुतं कुरुते कुजाधिपतये ननु मङ्गलिका फलम् ॥६॥

भ्रा० सं०—जब भ्रामरीकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीरमें व्याधि, (रोग की वृद्धि) राजाओंसे भय, मित्रवर्ग तथा बन्धु-बान्धवोंसे कष्ट, विदेशमें भ्रमण, बुद्धिका नाश होता है और उत्पातके आघातसे पीड़ा होती है।

भ्रा० मं०—जब भ्रामरीकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्दशा होती है तब रजत (चांदी) विद्रुम (मोती) हेम (सोना) वराङ्गनाओं (उत्तमा स्त्री) से सुख, राजाओंसे प्रतिष्ठा और विमल कीर्त्ति (अच्छे यश) का लाभ होता है ॥६॥

भ्रा० पिं०-
निपुणमतिविनीतं वेदशास्त्रार्थसौख्यं स्वजनजनसुखाढ्यंतीर्थयात्रादिलाभम्।
निजसकलरिपुघ्नंमानिनं पिंगला चेद्यदि भवति कदाचिद् भ्रामरी मध्यगा च॥

भ्रा० ध०—
प्रतापानलैर्भस्मितोऽशेषशत्रु कलत्रात्मजः श्रेष्ठसौख्यं विधत्ते ।
तथा हाटकादेः प्रवालस्य लब्धिः दशा धन्यका भ्रामरीमध्यगा चेत् ॥८॥

भ्रा० पिं०—जब भ्रामरीकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब विद्या तथा नम्रताकी वृद्धि होती है । वेद शास्त्रका अर्थ जाननेवाला होता है । अपने

बन्धु-बान्धवोंसे सुख और तीर्थयात्राका लाभ होता है। अपने शत्रुओंको नाश करता है और यशको प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

भ्रा० ध०—प्रताप बलसे शत्रुओंका नाश, स्त्री-पुत्रादिसे विशेष सुखका लाभ और हाटक (सोना) प्रवाल (मूंगा) की लब्धि होती है। जब भ्रामरीकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब ऐसा समझना चाहिये ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके भ्रामरीपाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि।

अथ भद्रिकापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि।

भ. भ.-प्रौढप्रतापाद् विजितारिपक्षं क्षोणीपतिः प्रीतिमहाप्रतिष्ठाम्।
प्रसन्नमूर्तिं कुरुते धनाढ्यं भद्रादशा भद्रिकापाकमध्ये ॥ १ ॥
भ० उ०-दद्रु-कण्डु-मुख-रोग-पीडितं वाजिवाहनविनाशदुःखदम्।
वह्निचौरनृपशत्रुपीडितं भद्रिका भवति चोल्किकान्विता ॥ २ ॥

भ० भ०—जब भद्रिकाकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब प्रौढ़ प्रतापसे शत्रुओंपर विजय, राजाओंसे प्रतिष्ठा तथा प्रेम, शरीरकी वृद्धि और धन का लाभ होता है ॥ १ ॥

भ० उ०—दद्रु (दाद) कण्डु (खुजली) और मुखरोगसे पीड़ा (कष्ट) वाजि (घोड़े) वाहन (सवारी) का नाश, अग्नि-चौर-राजा, और शत्रुकृत उपद्रवसे पीड़ित होता है। जब भद्रिकाकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब ऐसा समझना चाहिये ॥ २ ॥

भ० सि०-श्रीधर्म्मकार्य्येषु सदा मतिश्च भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ।
अत्यर्थमर्थे विभुतासमेतश्चेत्सिद्धिका भद्रिकापाकगा स्यात् ॥३॥
भ० सं०-ज्वरवमनविकारं गुप्त दुःखंविपत्ति-
र्बलिभयमपिवादर्वादयुद्धे विनाशः।
निजकुलपरिभ्रंशो क्लेशपीडा व्रणाढ्यं
यदि भवति च भद्रा सङ्कटापाकगास्यात् ॥ ४ ॥

भ० सि०—जब भद्रिकाकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब

धर्म्म-कार्य्यमें मति, देवता और ब्राह्मणों की भक्ति-मार्गमें प्रवृत्ति, धनका अत्यन्त लाभ और प्रभुत्व (प्रताप) की वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

भ० सं०—जब भद्रिकाकी महादशामें संकटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब ज्वर (बुखार) वमन (कै) गुप्त रोग (उपदंश, सूजाक), अनेक विपत्तियों का संयोग और शत्रुओंसे भय तथा विषाद (मानसी व्यथा) युद्धमें पराजय, स्त्री-पुत्रादि का नाश और अनेक प्रकार का क्लेश व्रण (घाव) होता ॥ ४ ॥

भ० मं०—धान्याम्बराणि निजवर्गसुखानि पुष्टिं
लीलाविलासपुरपत्तनकञ्च सिद्ध्यै ।
लोकेषु चैव कुरुते च महाप्रतिष्ठां
भद्रादशां गतवती किल मङ्गला च ॥ ५ ॥

भ० पिं०-सुहृदनन्तधनं कलिनाशनं विमलबुद्धिविलाससुखानि च ।
अमलकीर्त्तिगणं किल पिङ्गला सुखयुतं कुरुते बुधगा यदा ॥६॥

भ० मं०—जब भद्रिकाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है, तब अन्न-वस्त्रका लाभ, स्त्री-पुत्र-बन्धु वर्गोंसे सुख, अनेक प्रकारका सुखविलास, मनोरम गांव जमीदारीका लाभ और लोकमें विशेष रूपसे प्रतिष्ठालाभ होती है ॥ ५ ॥

भ० पिं०—भद्रिकाकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होनेपर मित्रोंसे अनेक प्रकारके धन, कलहका नाश, पवित्र-बुद्धि, भोग-सुखकी प्राप्ति, सुन्दर कीर्त्ति और सुखोंसे युत ये फल होते हैं ॥ ६ ॥

भ० ध०-कलत्रसौख्यं महिषी सुधेनुर्द्रव्यागमं शत्रुजयं विवादे ।
नृपेन्द्रमान्यं कुरुते च धन्या भद्रादशायां यदि चेत् प्रतिष्ठा ॥७॥

भ० भ्रा०-[illegible]दिवियोग दुःखं महद्भयं भूपकृतं त्वरिष्टम् ।
त्रिदोषरोगञ्च शरीरकष्टं चेद् भ्रामरी भद्रिकापाकगा स्यात् ॥८॥

भ० ध०—जब भद्रिकाकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब स्त्री-पुत्रादिसे सुखका लाभ होता है, महिषी (भैस) गौ, धनका लाभ होता है संग्राममें शत्रुओंपर विजय और राजाओंसे आदर और प्रतिष्ठा होती है ॥ ७ ॥

भ० भ्रा०—जब भद्रिकाकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है

तब स्त्री-पुत्रादिसे वियोग, राजाओंसे संग्राम-भय और शरीरमें त्रिदोष सम्बन्धी विमारीसे विशेष कष्ट होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादेयोगिनीजातके भद्रिकापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि ।

अथ उल्कापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि ।

उ० उ०-देहे पीडा जायते वातपित्तैः राज्ञो भीतिः बन्धनं शत्रुभीतिः ।
स्त्रीपुत्रादेः स्याद्वियोगो विपत्तिश्चोल्कापाके स्याद्भवेच्चोल्किका च ॥ १ ॥

उ० सि०-
क्रयाद्विक्रियाद्धावि लाभः स्ववर्णात्तथा वस्त्रतो धान्यलाभो मतश्च ।
स्वलाभः पुरे नाथता राज्यमत्र भवेदुल्किकापाकगा सिद्धिका चेत् ॥२ ॥

उ० उ०—उल्काकी महादशामें जब उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीर में वात (वायु) पित्तकी विमारी, राजाओंसे तथा शत्रुओंसे बन्धनका भय, स्त्री पुत्रादिसे वियोग और अनेक प्रकारकी विपत्ति प्राप्त होती है ॥ १ ॥

उ० सि०—जब उल्काकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब व्यापारमें विशेष लाभ, तथा बन्धु बान्धवोंसे लाभ, धान्य तथा वस्त्रका लाभ और अपने ग्राममें राजपदवीका लाभ होता है ॥ २ ॥

उ० सं०—
शिरःकर्णनाशाक्षिकण्ठे विकारो भवेत्क्लेशकष्टं नृपाच्चौरतोऽपि ।
भयं बन्धनं देहपीडा वियोगं भवेदुल्किकामध्यगा संकटा चेत् ॥ ३ ॥

उ० मं०—
रोगादिनाशं रिपुकष्टनाशं लाभो भवेद्देशपतेः सकाशात् ।
पौराः जनास्तस्य सहायकाः स्युश्चेन्मङ्गला चोल्किकापाकगा स्यात् ॥४॥

उ० सं०—जब उल्काकी महादशामें संकटाकी अन्तर्दशा होती है तब शिर, कान, नाक, आंख, और कण्ठ में पीड़ा और भी अनेक प्रकारका कष्ट, राजाओं तथा चोरोंसे भय, शरीरमें पीड़ा और स्त्री-पुत्रादिसे वियोग होता है ॥ ३ ॥

उ० मं०—जब उल्काकी महादशामें संकटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब

रोगका नाश, तथा शत्रुकृत उपद्रवोंका नाश होता है, राजाओंसे लाभ और बन्धुओंसे सहायता मिलती है ॥ ४ ॥

उ० पिं०—

वराङ्गनाहास्यविलाससौख्यं वस्त्रादिलाभं धनधान्यसौख्यम्।
पुण्ये मतिः स्याद्द्विजदेवतीर्थे चेदुल्किकापाकगा पिङ्गला स्यात् ॥ ५ ॥

उ० ध-सुखोदयं मित्रसमागमं च रिपुक्षयं देशनराधिपत्यम्।
त्रिदोषरोगश्च शरीरकष्टं चेद् धन्यका भद्रिकापाकगा स्यात् ॥६॥

उ० पिं०—जब उल्काकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब अच्छी २ स्त्रियोंसे हास्य विलासका सुख, वस्त्र-धन-धान्य और सुखका लाभ, धर्म्म-कार्य देवता-ब्राह्मण इनमें श्रद्धा होती है और तीर्थ यात्राका लाभ होता है ॥ ५ ॥

उ० ध०—जब उल्काकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब सुखका उदय, मित्र वर्गोंका समागम, शत्रुओंका नाश, देश तथा मनुष्योंपर अधिकार प्राप्त होता है और प्रतापकी वृद्धि तथा लोगोंसे मैत्री होती है ॥ ६ ॥

उ० भ्रा०-देशत्यागं व्याधिदुःखं वियोगं बन्धुद्वेषं बुद्धिनाशं धनान्तम्।
तेजोभ्रंशं चाग्निचौरातिभीतिमुल्कापाके जायते भ्रामरी चेत् ॥७॥

उ० भ०-सुवर्णरौप्यादिकलाभमुग्रं वाणिज्यतोऽतीव धनागमः स्यात्।
चतुष्पदात्प्राप्तिरिहोल्कदायां चेद् भद्रिका स्वीयगृहस्य लब्धिः ॥८॥

उ० भ्रा०—जब उल्काकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब विदेशमें भ्रमण, शरीरमें रोग, स्त्री पुत्रादिसे, वियोग बन्धुवर्गोंसे द्वेष, धन, बुद्धि तथा तेज (यश) का नाश होता है और चौरका भय होता है ॥ ७ ॥

उ० भ०—जब उल्काकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब सुवर्ण (सोना) रौप्य (चांदी) आदिका विशेष लाभ, तथा व्यापारसे बहुत धनकी प्राप्ति और चतुष्पद (गौ, भैंस, हाथी, घोड़े) से लाभ तथा गृहका लाभ होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके उल्कापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि।

* * *

अथ योगिनीजातके सिद्धापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्दशाफलानि ।

सि० सि०-द्रव्यागमो मनसि चिन्तितकार्यसिद्धि-
गेंहे विवाहसुखमुण्डननिश्चनाश्च ।
वामासुतादिसुखमत्र भवेद्विभुत्वं
चेत्सिद्धिका स्वीयदशान्तरे स्यात् ॥ १ ॥

सि० सं०-आलस्यतन्द्राकटिगुह्यपीडा वामाविकारोदरवातवेगः ।
राज्ञप्रभीतिर्जलवन्हिपीडा सिद्धादशायां यदि संकटा स्यात् ॥२॥

सि० सि०—अनेक द्रव्योंका आगम (आमदनी), मनोवाञ्छित कार्यकी सिद्धि, अपने घरमें विवाह-मुण्डन (चूड़ाकरण) आदि उत्सव-बिना खर्चके होना, स्त्री-पुत्रादिसे विशेष सुखका अनुभव होता है। यदि सिद्धाकी महादशामें सिद्धिका की अन्तर्द्दशा होती है तब ऐसा समझना चाहिये ॥ १ ॥

सि० सं०—आलस्य और तन्द्राका विशेष होना गुह्येन्द्रियमें, कमरमें और स्त्रीसे, पीड़ा, पेटमें वायुकी बिमारी, राजाओंसे पीड़ा हो, जब सिद्धाकी महादशामें सङ्कटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब ऐसा समझना चाहिये ॥ २ ॥

सि० मं०-मुक्ताप्रवालमणिविद्रुमलाभकारी
नानाविधं धनचयं कुरुते विभुत्वम् ।
दिव्याङ्गनावदनपङ्कजषट्पदत्वं
चेन्मङ्गला भवति सिद्धिकपाकमध्ये ॥ ३ ॥

सि० पिं-आर्द्रं कपोलं सुभगं शरीरं हेमादिवस्त्रं परिभूषितं च ।
कामाधिकं कामिनिसङ्गरङ्गं सिद्धादशायां यदि पिङ्गला स्यात् ॥ ४ ॥

सि० मं०—मुक्ता-मूंगा-मणि (जवाहरात) मोती और अनेक विध धनका लाभ, पदाधिकारी (औफिसर) अनेक सुन्दरी स्त्रियोंसे अनेक प्रकारसे प्रेम होता है यदि सिद्धाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

सि० पिं०—जब सिद्धाकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीर अत्यन्त मनोहर होजाता है, तथा सुवर्ण-वस्त्र-आदिका विशेष सुख होता है। कामाधिक्यसे कामिनियोंमें विशेष आसक्ति होती है ॥ ४ ॥

सि० ध०-गृहद्वारराजी रणेरङ्गराजी विचित्राम्बराणां स्वदेशस्य लाभः ।
कुटुम्बाधिको मित्रपक्षादिलाभो यदा सिद्धिकामध्यगा धन्यका चेत् ॥५॥

सि० भ्रा०—
विदेशभ्रमं हानिमुद्वेगतां च कलत्राङ्गपीडां सुखैर्वर्जितत्वम् ।
ऋणं व्याधिवृद्धिं रिपूणां भयं च यदा भ्रामरी सिद्धिकापाकमध्ये ॥६॥

सि० ध०—जब सिद्धाकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब घर-द्वारकी विशेष प्राप्ति, संग्राममें शत्रुओं पर विजय, चित्र-विचित्र वस्त्रोंका तथा देशोंका लाभ, परिवारकी वृद्धि और मित्रवर्गादिकी वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

सि० भ्रा०—जब सिद्धाकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तब विदेश-भ्रमणसे हानि चित्तमें उद्वेग, स्त्री-पुत्रादिका कष्ट सुखका विनाश ऋणकी वृद्धि और शत्रुओंका भय होता है ॥ ६ ॥

सि० भ०-सकलतापहृतिश्च सुखोदयं विमलकीर्त्तियुतं रिपुबन्धनम् ।
विपुलगेहसुखं नृपमान्यतां बुधदशा किल सिद्धिगता भवेत् ॥ ७ ॥

सि० उ०-सुखादिनाशं तनुरोगदुःखं नृपादिभीतिं कलहं कुमित्रम् ।
मनोवियोगं भ्रमणं विशेषं चेदुल्किका सिद्धिकपाकगा स्यात् ॥८॥

सि० भ०—जब सिद्धाकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब सभी विपत्तियोंका नाश, सुखका उदय विमलकीर्त्ति (यश) का लाभ, शत्रुओंका नाश, राजमहलोंका सुख, राजाओंसे सम्मान और धनकी प्राप्ति होती ॥ ७ ॥

सि० उ०—जब सिद्धाकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब सुखका विनाश, शरीरमें रोगकी वृद्धि, राजाओंसे भय, बन्धुओंसे कलह, मित्रवर्गोंसे वैर, चित्तमें उद्वेग और विदेशमें भ्रमण होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशंकरसंवादेयोगिनीजातके सिद्धापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि ।

* * *

अथ संकटापाकमध्ये सर्वासां योगिनीनामन्तर्द्दशाफलानि ।

सं० सं०-देहादिकष्टं मरणेन तुल्यं रोगादिका वातकफप्रपित्तैः ।
त्रिदोषरोगं रिपुवर्ग भीतिं चेत्संकटा संकटपाकगा स्यात् ॥ १ ॥

सं० मं०—श्री-स्त्री-सुतादि-गुरुता धनधान्यवृद्धि
पुंसस्तु सौख्यमधिकं द्विजगौरवादिः ।
सुज्ञानपण्डितकलालिखनेमतिः स्यात्
चेन्मङ्गला भवति संकटा गामिनी च ॥ २ ॥

सं० सं०—जब संकटाकी महादशामें संकटाकी अन्तर्द्दशा होती है तब शरीरमें कफ, पित्त, वायुके विकारसे त्रिदोष रोगसे मरण तुल्य कष्ट होता है और शत्रुओंका भय होता है ॥ १ ॥

सं० मं०—जब संकटाकी महादशामें मङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब लक्ष्मीकी विशेष प्राप्ति, स्त्री-पुत्र-गुरुवर्ग-धन-धान्यसे सुखकी वृद्धि होती है उच्च कोटिकी प्रतिष्ठा, बुद्धिकी वृद्धि और कलाशास्त्र (चित्रकारी विद्या) में प्रवृत्ति होती है ॥ २ ॥

सं० पिं०-प्रवालमुक्ताफलवस्त्रलाभः क्रयाणकात् सर्वजनेषु मैत्री ।
रथाश्वलाभं खलु खेचराणां चेत्सङ्कटापाकगता च पिङ्गला ॥३॥
सं० ध०-सेवादिकं देवगुरुद्विजानां दाने मतिस्तीर्थ जपादिहोमे ।
बहूद्यमा स्याद्धनवृद्धिरत्र चेत्सङ्कटायां भवतीह धान्या ॥ ४ ॥

सं० पिं०—जब सङ्कटाकी महादशामें पिङ्गलाकी अन्तर्द्दशा होती है तब प्रवाल (मूंगा) मुक्ता (मोती) फल, वस्त्राभरणका लाभ-व्यापारसे विशेष लाभ स्वजन वर्गोंसे मैत्री, रथ (सवारी) और घोड़े इत्यादिका लाभ होता है ॥ ३ ॥

सं० ध०—जब सङ्कटाकी महादशामें धन्याकी अन्तर्द्दशा होती है तब देवता-ब्राह्मण-गुरु-वर्गोंकी सेवामें प्रवृत्ति, तीर्थयात्रा-यज्ञ-दान-हवनमें श्रद्धा होती है और अनेकों उद्यमसे धनकी वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

सं० भ्रा०-देशाटनं पर्वतमस्तकेषु राज्यादिपीडा धनहानिरत्र ।
वातादिरोगं रिपुभीतिकष्टं चेद्भ्रामरी राहुदशां प्रपन्ना ॥ ५ ॥
सं० भ०-अतुलकीर्त्तिबलाधिकवर्द्धनं रिपुगणस्य च संहृतिरत्र सा ।
सकलतापहृतिश्च सुखोदयं यदि च संकटपाकगभद्रिका ॥ ६ ॥

सं० भ्रा०—जब सङ्कटाकी महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्द्दशा होती है तब पहाड़ी देशमें भ्रमण, राज्यसम्बन्धी पीड़ा, धनका विनाश, शरीरमें वायुकी बिमारी और शत्रुओंसे भय होता है ॥ ५ ॥

सं० भ०—जब सङ्कटाकी महादशामें भद्रिकाकी अन्तर्द्दशा होती है तब कीर्त्ति (यश) बलकी विशेष वृद्धि होती है। शत्रुओंका विनाश होता है। सब तरह की विपत्तियोंसे छुटकारा पाकर और सुखकी वृद्धि होती है ॥ ६ ॥

सं० उ०—
महारोगपीडा च नेत्रे च कर्णे तथा पादमूले कटीगुह्यकादौ ।
धने हानिकृद्वाहने नाशकर्त्री भवेत्सङ्कटापाकगा चोल्किका चेत् ॥ ७ ॥
सं० सि०-भवेन्महौजा नृपकार्य्यकर्त्री वार्त्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ।
अनेकमैत्री प्रियदर्शनं चेत् सिद्धादशा सङ्कटपाकगा स्यात् ॥ ८ ॥

सं० उ०—जब सङ्कटाकी महादशामें उल्काकी अन्तर्द्दशा होती है तब नेत्र, (आंख), कान, पांव, कमर, गुह्येन्द्रियों (गुदा लिङ्ग), में कठिन रोगोंसे पीड़ा होती है, धनकी हानि और वाहन (सवारी) का विनाश होता है ॥ ७ ॥

सं० सि०—जब सङ्कटाकी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्द्दशा होती है तब राजाओंके यहाँ प्रधानता, राज-विद्यामें कुशलता, मित्र तथा बन्धुवर्गोंसे सहायता और अनेक शुभागमन होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके सङ्कटापाकमध्ये अन्तर्द्दशाफलानि ।

◆

अथ मिश्रकाध्यायः ।

दशोदयं समीचीनं एकमेवान्यथा भवेत् ।
तदा मिश्रफलं विंद्यात् अन्यथाऽपि च मिश्रकम् ॥ १ ॥
मया लिखित मिश्रकाध्यायसंज्ञं फलमेनच्चमत्कार भूतम् ।
श्रीशङ्करोक्त प्रकारानुरुपं सदा तद्विचार्य्यं सुधीभिर्महज्ञैः ॥ २ ॥

यदि महादशा अन्तर्द्दशा प्रत्यन्तर्द्दशा सूक्ष्मदशा इत्यादि यदि सभी शुभ हो तो शुभ फल, अशुभ होनेसे अशुभ (अनिष्ट) फल होता है। और यदि मिश्र हो अर्थात् शुभाशुभ दोनोंकी प्राप्ति हो तो मिश्रफल होता है। ऐसा समझना चाहिये ॥

यह योगिनीजातक श्रीशङ्कर भगवानुक्त चमत्कार युक्त मिश्रकाध्याय संज्ञक महज्ञ (ज्यौतिषी) विद्वानोंसे विचारने योग्य है ॥ २ ॥

अथ विरुद्धायाः योगिन्याः शान्तिमाह—

अथो वच्म्यहं पूजनाध्यायसंज्ञं सदा पूजनीयाः महज्ञैः विरुद्धाः ।

हरौ पूजिते सर्वदेवाः सुतुष्टास्तथाचर्चिताः स्वस्वखेटा नरात्तिम् ॥ ३ ॥
प्रसन्नो भवेत्तद्धरस्तस्य पुंसः शिवेनोक्तमेतच्छिवायाः पुरस्तात् ॥ ४ ॥

अब विरुद्ध योगिनीकी शान्ति कहते हैं। विरुद्धयोगिनीकी शान्तिके लिये श्रीशङ्कर भगवानकी पूजा (रुद्राभिषेकादि) जप (महामृत्युञ्जयादि) पाठ (हरिवंश माहेश्वर कवचादि) आदि करनेसे शङ्करभगवान् को प्रसन्नतासे सब का कल्याण होता है और शङ्करजीके पूजित होनेसे सभी देवता प्रसन्न होते हैं। इस तरह योगिनीजातकके प्रसङ्गमें लोकोपकारार्थ श्रीशङ्कर भगवान् श्रीपार्वती जीसे कहा है ॥ ३–४ ॥

रुद्रं रुद्रसहस्रकं च विधिवत् लक्षं जपेद्योगिनी
ध्यानं चेतसि संविधाय च दशां संहोमयेद्वस्तुभिः ॥
अन्ते दुग्धयुतैस्तथा मधुयुतै रक्तैस्तथा पुष्पकैः।
हुत्वा तद्दशमैस्तु तर्प्पण विधिं विप्रांस्तथा भोजयेत् ॥ ५ ॥

विरुद्ध योगिनीकी शान्तिके लिये रुद्र मन्त्रका ग्यारह हजार या एक लाख जप स्वयं करे या ब्राह्मण द्वारा करवाना चाहिये। विधि पूर्वक योगिनीकी पूजा ध्यान करके अन्तमें दूध मधु (शहद) रक्तपुष्प (करवीरादि) से जप, दशांश हवन, हवनका दशांश, तर्प्पण, तर्प्पणका दशांश मार्जन, मार्जनका दशांश ब्राह्मण भोजन, करवाना चाहिये ॥ ५ ॥

एवं यश्च विरुद्धयोगिनि मनुंजप्त्वा विधिं कुर्व्वते।
विघ्नानामयुतं च सप्तदिवसाद्दूरी भवेत्तस्य च ॥
नित्यं योगिनिमन्त्रवीजसहितो मन्त्रः प्रपूज्यो नरैः।
पार्श्वे रक्षति शत्रुतो हि नियतं लक्ष्मी स्थिरा वेश्मनि ॥ ६ ॥

इस तरहसे विरुद्धयोगिनीकी शान्तिके लिये जो मनुष्य करता है उसको अनेकानेक विघ्नोंका समूह बहुत शीघ्र दूर हो जाता है। और जो मनुष्य प्रतिदिन बीज मन्त्रके सहित योगिनीके यन्त्र तथा यन्त्रोंकी पूजा करता है और यन्त्रको धारण करता है उसको किसी प्रकारका भय नहीं होता है, घरमें सदा स्थिरा होकर लक्ष्मी वास करती है ॥ ६ ॥

इति श्रीभवानीशङ्करसंवादे योगिनीजातके विरुद्धयोगिनीनां शान्तिः।

◆

अथ योगिनीस्वामी तथा महादशावर्ष बोधक चक्रम् ।

यो. स्वा.	चन्द्रः	सूर्य्यः	गुरूः	कुजः	बुधः	शनिः	शुक्रः	राहुः
यो. ना.	मंगला	पिंगला	धन्यका	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
दशावर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८

अथ मङ्गलापाकमध्ये मङ्गलाद्यन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	मं.मं.	मं.पिं.	मं.धा.	मं.भ्रा.	मं.भ.	मं.उ.	मं.सि.	मं.सं
दशाव.	००	००	००	००	००	००	००	००
मासः	००	००	१	१	१	२	२	२
दिनानि	१०	२०	००	१०	२०	००	१०	२०

अथ पिंगलापाकमध्ये पिंगलादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	पिं.पि	पिं.धा.	पिं.भ्रा	पिं.भ.	पिं.उ.	पिं.सि.	पिं.सं.	पिं.मं.
वर्ष.	००	००	००	००	००	००	००	००
मासाः	१	२	२	३	४	४	५	००
दिना.	१०	००	२०	१०	००	२०	१०	२०

अथ धान्यापाकमध्ये धान्यादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	धा.धा.	धा.भ्रा.	धा.भ.	धा.उ.	धा.सि.	धा. सं.	धा.मं.	धा.पिं
दशाव.	००	००	००	००	००	००	००	००
मासाः	३	४	५	६	७	८	१	२
दिनानि.	००	००	००	००	००	००	००	००

अथ भ्रामरीपाकमध्ये भ्रामर्य्यादीनामन्तर्दशा च० ॥

यो. ना.	भ्रा. भ्रा.	भ्रा.भ.	भ्रा.उ.	भ्रा.सि.	भ्रा.सं.	भ्रा.मं.	भ्रा.पि.	भ्रा.धा.
द. व.	००	००	००	००	—२०	००	००	००
मा.	५	६	८	९	१०	१	२	४
दि.	१०	२०	००	१०	२०	१०	२०	००

अथ भद्रिकापाकमध्ये भद्रादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	भ.भ.	भ.उ.	भ.सि.	भ.सं.	भ.मं.	भ.पिं.	भ.धा.	भ.भ्रा.
द. व.	००	००	००	१	००	००	००	००
मा.	८	१०	११	१	१	३	५	६
दि,	१०	००	२०	१०	२०	१०	००	२०

अथ उल्कापाकमध्ये उल्कादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	उ.उ.	उ. सि.	उ.सं.	उ.मं	उ.पिं.	उ.धा.	उ. भ्रा.	उ.भ.
द. व.	१	१	१	००	००	००	००	००
मा.	००	२	४	२	४	६	८	१०
दि.	००	००	००	००	००	००	००	००

अथ सिद्धापाकमध्ये सिद्धादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	सि.सि.	सि.सं.	सि.मं.	सि.पिं.	सि. ध.	सि.भ्रा.	सि. भ.	सि, उ.
द. व.	१	१	००	००	००	००	००	१
मा.	४	६	२	४	७	९	११	२
दि.	१०	२०	१०	२०	००	१०	२०	००

अथ संकटापाकमध्ये संकटादीनामन्तर्दशाचक्रम् ।

यो. ना.	सं. सं	सं.मं.	सं. पिं.	सं. धा.	सं. भ्रा.	सं. भ.	सं.उ.	सं.सि.
द. व.	१	००	००	००	००	१	१	१
मा.	९	२	५	८	१०	१	४	६
दि.	१०	२०	१०	००	२०	१०	००	२०

इति श्रीयोगिनीजातके अन्तर्दशाबोधकचक्राणि ।

अथ प्रसङ्गात् शान्त्यै जपार्थं योगिनीनां मन्त्राः ।

(१) ओं ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा ॥ इति मङ्गला ॥

(२) ओं ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा ॥ इति पिङ्गला ॥

(३) ओं श्री धनदे धन्ये स्वाहा ॥ इति धान्या ॥

(४) ओं भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा ॥ इति भ्रामरी ॥

(५) ओं भद्रिके भद्रं देहि भयं नाशय स्वाहा ॥ इति भद्रिका ॥

(६) ओं उल्के मम रोगं नाशय जम्भय स्वाहा ॥ इति उल्का ॥

(७) ओं सिद्धे सर्वमानसं साधय स्वाहा ॥ इति सिद्धा ॥

(८) ओं ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा ॥

अपरश्च—

ओं संकटे महालक्ष्मि मम संकटं नाशय स्वाहा ॥ इति संकटा ॥

अथ मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी योगिनीनां दानद्रव्याणि

'क्लौंसङ्ख्या चतुर्गुणा' इति जपविषये ।

❀ मङ्गला ❀	❀ पिङ्गला ❀	❀ धान्या ❀	❀ भ्रामरी ❀
स्वा चन्द्रमा,	स्वा० सूर्य,	स्वा० बृहस्पति,	स्वा० मंगल,
मद्वंशपात्रस्थित-	माणिक्यमणि,	शर्क्करा,	प्रवाल,
श्वेततण्डुल,	गोधूम,	हरिद्रा,	गोधूम,
कर्पूर, श्वेतमोती,	सवत्साधेनु,	अश्व,	मसूरिका,
श्वेतवस्त्र,	रक्तवस्त्र, गुड,	पीतधान्य,	अरुण, वृषभ,
क्षीरपूर्णशङ्ख,	सुवर्ण, ताम्र,	पीतवस्त्र,	गुड, सुवर्ण,
श्वेतवृषभ,	रक्तचन्दन,	पुष्परागमणि,	रक्तवस्त्र,
रौप्य, घृतपूर्ण–	कमलपुष्प,	लवण,	करवीरपुष्प,
कुम्भ, दक्षिणा,	दक्षिणा,	सुवर्ण, दक्षिणा,	ताम्र, दक्षिणा,
जपसं. १०००	जपसं. २०००	जपसं. ३०००	जपसं. ४०००

अथ भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा, योगिनीनां दानद्रव्याणि ॥

'क्लौंसङ्ख्या चतुर्गुणा' इति जपविषये ।

❀ भद्रिका ❀	❀ उल्का ❀	❀ सिद्धा ❀	❀ संकटा ❀
स्वा० बुध,	स्वा० शनि,	स्वा० शुक्र,	स्वा० राहु, या,
नीलवस्त्र,	माष, तिलतैल,	चित्रवस्त्र,	केतु,
सुवर्ण, कांस्य,	नीलमणि,	श्वेताश्व,	गोमेदरत्नः,
मुद्ग, घृत,	नीलवस्त्र,	धेनु, वज्रमणि,	वैदूर्यमणि,
गारुत्मकमणि,	तिल,	रौप्य, सुवर्ण,	तुरङ्ग, तिलतैल,
सर्ववर्णपुष्प,	कुर्थी,	तण्डुल,	नीलवस्त्र, तिल,
दासी, गजदन्त,	महिषी, लौहस्त्र,	आज्य,	कम्बल, कस्तूरी,
दक्षिणा,	कृष्णगावी,	श्रीखण्डचन्दन,	लौह, शस्त्र,
जपसं. ५०००	दक्षिणा,	दक्षिणा,	छाग, दक्षिणा,
	जपसं. ६०००	जपसं. ७०००	जपसं. ८०००

इति मुङ्गेरमण्डलान्तर्गतवरौनीग्रामवास्तव्य ज्यौतिषधर्म्मशास्त्राचार्य-ज्यौतिषतीर्थ-काव्यरत्न-झोपाख्य-श्रीदीनानाथशास्त्रि-कृता योगिनीजातके विमलाभाषाटीका समाप्त ॥